सांध्य दैनिक
4PM

ये दुनिया एक रंगमंच है और सभी पुरुष और स्त्रियां महज किरदार हैं, उनको आना और जाना होता है और एक व्यक्ति अपने जीवन में कई किरदार निभाता है।

–विलियम शेक्सपीयर

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_Sanjay | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 10 ● अंकः 245 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शुक्रवार, 11 अक्टूबर, 2024

पाकिस्तान के खिलाफ इंग्लैंड ने बनाए... 7 | जम्मू-कश्मीर में दिखेगी नई... 3 | जल जीवन मिशन में अधिकारी कर... 2

अखिलेश यादव को जयप्रकाश नारायण को श्रद्धांजलि देने से रोकने पर सियासी बवाल

विपक्ष ने बीजेपी की योगी सरकार पर किया जोरदार प्रहार

- » बोले पूर्व मुख्यमंत्री- समाजवादियों का आंदोलन कोई ताकत नहीं रोक सकती
- » घर के बाहर ही पूर्व सीएम ने किया माल्यार्पण
- » सपा प्रमुख बोले- त्यौहार नहीं होता तो तोड़ देते बैरिकेडिंग
- » विपक्ष का आरोप टीन शेड लगाकर सरकार कुछ तो छिपाना चाह रही
- » पूरे प्रदेश में सड़क पर उतरे सपा कार्यकर्ता

फोटोः सुमित कुमार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जयप्रकाश नारायण की जयंती पर प्रदेश की सियासत गरमा गई है। लखनऊ स्थित जेपीएनआईसी को टिन शेड से ढकने व सपा प्रमुख अखिलेश यादव को योगी सरकार की पुलिस द्वारा माल्यार्पण से रोकने पर पूरे राज्य में सपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया है। हालांकि सरकार ने कहा है बिल्डिंग में तोड़फोड़ व सुरक्षा में सेंध की सूचना की वजह से वहा पर किसी को भी जाने से रोका गया।

उधर सपा प्रमुख ने कहा कि कोई बैरिकेडिंग सपाइयों के विचारधारा को रोक नही सकती है। शुक्रवार को समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव की निर्धारित यात्रा से पहले जय प्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (जेपीएनआईसी) को सील कर दिया गया है। बैरिकेडिंग की गई है और पुलिस बल तैनात किया गया है। अखिलेश के घर के बाहर पुलिस तैनात कर दी गई है। इससे सपा नेता आक्रोशित हैं। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता पुलिस बल और बैरिकेडिंग की मौजूदगी के बीच पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव के आवास पर इकट्ठा होने लगे हैं। उधर सपा मुखिया ने कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश जी जय प्रकाश के आंदोलन से निकले हैं। जो सरकार उनके जन्मदिन पर सम्मानित नहीं करने दे रहे हैं, उन्हें इसी समय भाजपा से गठबंधन तोड़ लेना चाहिए। उधर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बीजेपी की मंशा पर सवाल उठाया हैं।

'खुद त्यौहार मना रहे हैं और हमें त्यौहार नहीं मनाने दे रहे'

अखिलेश ने कहा कि पता नहीं इस क्या कारण है कि इस सरकार ने हमें माल्यार्पण नहीं करने दिया। भाजपा ने हर अच्छा काम रोका है। ये सरकार रोकना चाहती है कि हम माल्यार्पण न करें। इसलिए हमने सड़क पर ही माल्यार्पण कर दिया है। समाजवादी लोग हर साल मनाते रहेंगे। ये पुलिस कब तक खड़ी रहेगी। जयप्रकाश जी को हमलोग वहीं जा कर सम्मानित करेंगे, ये सरकार गूंगी बहरी तो है ही लेकिन आज इसे दिखाई भी नहीं दे रहा है, ये विनाशकारी सरकार है, इन्हें कोई भी अच्छी चीज दे दो उसका विनाश कर देती,क्या साजिश है खुद त्यौहार मना रहे हैं और हमें त्योहार नहीं मनाने दे रहे हैं।

इमारत की सुरक्षा के लिए नहीं दी गई अनुमति : जयवीर सिंह

उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री जयवीर सिंह ने कहा, पिछले साल भी अखिलेश यादव और उनके कार्यकर्ताओं ने जबरन जेपीएनआईसी के दीवारों को फांदकर उसे क्षतिग्रस्त करने का काम किया था। बंद पड़ी इमारतों में माल्यार्पण की अनुमति नहीं दी जा सकती है। लखनऊ विकास प्राधिकरण ने कल ही अखिलेश यादव को ये अवगत करवा दिया था कि वहां माल्यार्पण की अनुमति देना सुरक्षा कारणों से संभव नहीं है। अगर अखिलेश यादव भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं तो जेपीएनआईसी का निर्माण उन्हीं के कार्यकाल के दौरान हुआ। 2017 के बाद वहां कोई काम नहीं हुआ है तो अगर भ्रष्टाचार का कोई आरोप है तो अखिलेश यादव के कार्यकाल के हो सकते हैं। जयप्रकाश को श्रद्धांजलि कहीं से भी दी जा सकमी है।

प्रकाश नारायण आजादी की लड़ाई में हमारे बड़े नेता थे : माता प्रसाद

उत्तर प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और सपा नेता माता प्रसाद पांडेय ने कहा, जयप्रकाश नारायण आजादी की लड़ाई में हमारे बड़े नेता थे, स्वतंत्रता सेनानी थे और उन्हें सभी पार्टियों के नेताओं का सम्मान प्राप्त है। इसलिए आज उनकी जयंती पर हम प्रतिपक्ष उनका सम्मान करने के लिए उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हैं। पिछली बार भी उन्हें (अखिलेश यादव) रोका गया था लेकिन हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष वहां गए और माल्यार्पण किया फिर चले आए। मुझे समझ नहीं आता कि केवल माल्यार्पण करने से कौन सा पहाड़ टूट जाता है? या तो उस संस्थान(जेपीएनआईसी) में कोई गड़बड़ी है जिसे बेचने का प्रयास किया जा रहा है और ये गड़बड़ उजागर न हो इसलिए ऐसी लोकतांत्रिक कार्रवाई करके उन्हें(अखिलेश यादव) जाने से रोका जा रहा है।

लोकतंत्र में तानाशाही लंबी नहीं चलती : शिवपाल

अखिलेश यादव और सपा महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने रास्ता रोके जाने पर अपनी प्रतिक्रि या दी है। सपा महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि सत्ता के मद में चूर भाजपा लोकतंत्र की बैरिकेडिंग करना चाहती है। सत्ता का तंत्र कभी लोक के तंत्र पर भारी नहीं हो सकता। अतीत से सबक लीजिए सरकार! लोकतंत्र में तानाशाही लंबी नहीं चलती।

विक्रमादित्य मार्ग स्थित घर के बाहर भी बैरिकेडिंग

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव को जेपी एनआईसी जाने से रोकने के लिए उनके विक्रमादित्य मार्ग स्थित घर के बाहर बैरिकेडिंग कर दी गई है। आरएएफ सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है।

जल जीवन मिशन में अधिकारी कर रहे गड़बड़ी : दिग्विजय सिंह

पीएम मोदी को लिखा पत्र, बोले- केन्द्र से नहीं आ रहा फंड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि मध्य प्रदेश के 5 करोड़ गरीब परिवारों के सूखे और प्यासे कंठो को नल से जल पहुंचने का दावा करने वाले नल जल मिशन के बजट आवंटन में लापरवाही करने वाले जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई की जाए। साथ ही मध्यप्रदेश सहित सभी दस राज्यों को तत्काल वांछित राशि जारी करने के निर्देश देने का कष्ट करें।

दिग्विजय सिंह ने लिखा कि आदरणीय प्रधानमंत्री जी,भारत सरकार द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के क्रियान्वयन की ओर, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाह रहा हूं। केन्द्र सरकार से पर्याप्त बजट आवंटन के अभाव में यह आपका महत्वाकांक्षी मिशन बीच राह में दम तोड़ता नजर आ रहा है।

जमीनी स्तर पर दस बड़े राज्यों में नल-जल योजनाएं अधूरी पड़ी है। दिग्विजय ने आगे लिखा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को इस मामले में हस्तक्षेप कर केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री को पत्र लिखकर फंड की कमी से संबंधित अपनी व्यथा बताई है।

दिग्विजय सिंह में आगे लिखा कि इस वर्ष 15 अगस्त 2024 को आपने लाल किले की प्राचीर से 5 साल में 15 करोड़ परिवार तक नल जल के माध्यम से जल पहुंचने का भरोसा दिलाया था। पर आपका यह वायदा मध्यप्रदेश के 52 हजार ग्रामों में अधूरा नजर आ रहा है। राज्य सरकार ने केन्द्र के भरोसे ताबड़तोड़तरीके से पाईप खरीद लिए पर जल स्त्रोत पर ध्यान नही दिया।

थर्ड पार्टी से सोशल ऑडिट करने की मांग

दिग्विजय सिंह ने आगे लिखा कि प्रदेश में अब तक खर्च 28 हजार करोड़ रुपये से निर्मित संरचनाओं का किसी तटस्थ थर्ड पार्टी से सोशल ऑडिट कराने पर आपको प्रोजेक्ट की हकीकत पता चल जाएगी। बहुत कम जिले और योजनाएं ऐसी मिलेंगी जिनमें अनियमितता न बरती गई, ठेकेदारों पर घटिया कार्य करने तथा अधूरे काम करने के संगीन आरोप है। अब तक बड़ी संख्या में ठेकेदारों को पीएचई विभाग ने घटिया निर्माण कार्य करने, अमानक पाईप लाईन बिछाने के अरोपों में ब्लैक लिस्ट किया गया है। जिसमें अनेक कंपनियां गुजरात से जुड़ी है। जो गुजरात राज्य का नाम खराब कर रही है। बहुत से अधिकारियों के खिलाफ भी विभागीय जांच चल रही है।

जयराम ठाकुर झूठ के सौदागर : सीएम सुक्खू

» मुख्यमंत्री बोले- मोदी को दे रहे गलत फीडबैक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर पर जुबानी हमला बोलते हुए कहा कि नेता प्रतिपक्ष झूठ के सबसे बड़े सौदागर हैं। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गलत फीडबैक दे रहे हैं। प्रधानमंत्री महाराष्ट्र में टॉयलेट टैक्स का प्रचार कर रहे हैं। उन्हें अफसोस होता है कि देश के प्रधानमंत्री ऐसी बातें बोलते हैं।

प्रधानमंत्री को जयराम जो फीडबैक देते हैं, उन्हें इस पर सोचना चाहिए कि ये किस प्रकार की बातें कर रहे हैं। उन्हें इस प्रकार का प्रचार नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जयराम ठाकुर को बोलना चाहिए कि झूठ की मशीन प्रधानमंत्री के मुंह में नहीं डालनी चाहिए। सुक्खू ने कहा कि 20 महीने की सरकार ने कोई टैक्स नहीं लगाया है। सोशल मीडिया पर झूठ परोसा जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा का नाम बड़ी झूठी पार्टी होना चाहिए। सीएम ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष पता नहीं क्या-क्या बोलते रहते हैं। नए-नए नाम खोजते रहते हैं। उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा झूठ अगर किसी ने बोला है तो वह हैं नेता प्रतिपक्ष जयराम और सबसे बड़े झूठे पर ही टैक्स लगाया जाना चाहिए। सुक्खू ने कहा कि पता नहीं कहां से कभी टॉयलेट टैक्स की बात करते हैं, जो कहीं है ही नहीं। कभी बोलते हैं कि खेल टैक्स लग गया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में 75 लाख परिवार रहते हैं। किसी के पास टॉयलेट टैक्स का बिल नहीं गया है। जबसे सरकार आई है, तबसे कभी खराब आर्थिक स्थिति तो कभी कुछ और बात करते हैं। अगर किसी चीज को सही करने की दिशा में व्यवस्था परिवर्तन करते हैं तो उस पर भी गलत बात करते हैं। हिमाचल की जनता पर कोई टैक्स लगाने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारा जो इनवेस्टमेंट ड्रेन हुआ है, वह पूर्व भाजपा सरकार की वजह से हुआ है। भाजपा ने जनता की संपदा को लूटा है और लुटाया है। उसे हमारी सरकार ठीक कर रही है।

सीएम विजयन ने मुझे माकपा में शामिल होने का न्योता दिया : सुरेश गोपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी ने दावा किया कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के वरिष्ठ नेता और केरल के मुख्यमंत्री पिनरायी विजयन ने एक बार उन्हें अपनी पार्टी में शामिल होने के लिए न्योता दिया था, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया था।

केंद्रीय पेट्रोलियम राज्य मंत्री गोपी ने यहां एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा, अगर वह इस बात से इनकार कर सकते हैं तो करके दिखाएं। मैंने उनसे कहा था कि मैं पार्टी में शामिल नहीं हो सकता क्योंकि मुझे राजनीति पसंद नहीं है। मैंने यही बात सभी नेताओं से कही थी। गोपी ने कहा कि हालांकि दो अगस्त, 2014 को कुछ घटनाओं के कारण वह राजनीति में आने को मजबूर हुए।

जीत के बाद एनसी कार्यकर्ता कर रहे गुंडागर्दी : इल्तिजा मुफ्ती

» पीडीपी की चेतावनी-उपद्रव रोके नहीं तो होगी कार्रवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) और सीपीआई(एम) पर जम्मू और कश्मीर विधानसभा चुनावों में जीत के बाद गुंडागर्दी होने का आरोप लगाया। पार्टी के मुख्यालय में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पीडीपी नेता इल्तिजा मुफ्ती ने एनसी को उसकी जीत पर बधाई दी और पार्टी के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला को विधायक दल का नेता चुने जाने पर भी शुभकामनाएं दीं, लेकिन सवाल उठाया कि क्या यह विशाल बहुमत गुंडागर्दी और संपत्तियों के विनाश के लिए था।

इल्तिजा ने कहा, श्रीगुफवारा-बिजबेहरासे एनसी के निर्वाचित विधायक बशीर वीरी गुंडागर्दी में लिप्त हैं। उनके कार्यकर्ता पीडीपी कार्यकर्ताओं के घरों की

बाहरी दीवारें तोड़ रहे हैं, जबकि एक पीडीपी कार्यकर्ता के गोशाला को भी आग लगा दी गई। मैं उमर अब्दुल्ला से पूछना चाहती हूं कि क्या यह विशाल बहुमत इसी के लिए मिला है? इल्तिजा मुफ्ती ने हाल ही में हुए चुनावों में वीरी के खिलाफ चुनाव हारने का भी जिके किया। उन्होंने आरोप लगाया कि एनसी के कार्यकर्ता पीडीपी की महिला कार्यकर्ताओं को परेशान कर रहे हैं और उनके खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि वे मुझे या मेहबूबा मुफ्ती को गालियां दें, लेकिन हमारे कार्यकर्ताओं को मत छुओ। अन्यथा, हम कार्रवाई करेंगे। इल्तिजा ने कहा कि वह बिजबेहारा के लोगों के लिए चिंतित हैं, क्योंकि उन्होंने गलत विधायक का चुनाव किया। केवल बिजबेहारा में ही नहीं, बल्कि एनसीडीएच पोरा क्षेत्र में भी इसी तरह की हरकतें कर रही है। सीपीआई(एम) कश्मीर के कुलगाम में भी जमात-ए-इस्लामी के खिलाफ ऐसा ही कर रही है। एनसी हमेशा गुंडागर्दी और गुंडा राज के लिए जानी जाती है। वे वही सब कर रहे हैं जो 30-40 साल पहले करते थे।

चार निर्दलीय विधायकों ने थामा नेकां का हाथ

चार निर्दलीय विधायकों ने नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) में शामिल होकर पार्टी का आंकड़ा बहुमत तक पहुंचा दिया है। अब एनसी के पास 46 विधायक हैं, जिससे पार्टी कांग्रेस के बिना भी सरकार बनाने की स्थिति में आ गई है। इन नए सदस्यों के शामिल होने से नेशनल कॉन्फ्रेंस की राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई है। पार्टी के नेताओं ने इन उम्मीदवारों का स्वागत किया और कहा कि यह कदम जम्मू-कश्मीर में एक स्थिर और प्रभावी सरकार की स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला ने इस अवसर पर कहा कि वे जनता के विश्वास को बनाए रखने और राज्य के विकास के लिए काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस नए राजनीतिक समीकरण के साथ, नेशनल कॉन्फ्रेंस आगामी सरकार के गठन की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाने की योजना बना रही है। पार्टी का यह कदम जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकता है। नई सदस्यों में शामिल होने वाले निर्दलीय उम्मीदवार हैं-प्यारे लाल, इंदरवाल से, सतीश शर्मा, चंब से, चौधरी अकराम, सुरनकोट से, रमेश्वर सिंह, बानी से ।

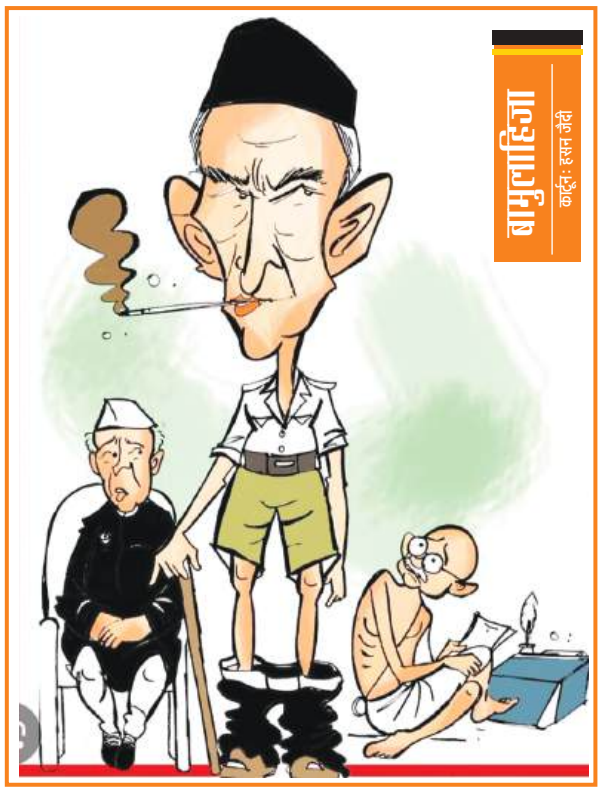

भाजपा के नवनिर्वाचित प्रत्याशी ने अफसरों को धमकाया

» बोले- मैं विधायक रहूं या न रहूं, किसी को नहीं छोड़ूंगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

फरीदाबाद। बड़खल विधानसभा क्षेत्र से नवनिर्वाचित प्रत्याशी धनेश अदलखा ने विधायक की शपथ लेने से पहले ही वीरवार को अधिकारियों की बैठक बुलाई। इस बैठक का एक वीडियो सामने आया है जिसमें वह अधिकारियों को धमकाते नजर आ रहे हैं।

एनआईटी स्थित गोल्फ क्लब में अदलखा ने नगर निगम, एफएमडीए व डिपो होल्डरों की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने सीवरेज की समस्या को लेकर अधिकारियों को जमकर फटकार लगाई और काम में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों को 72 घंटे के अंदर निलंबित कराने की चेतावनी दी। इसके अलावा उन्होंने डिपो धारकों को भी जमकर लताड़ लगाई और लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने की बात कही। बैठक में धनेश अदलखा ने कहा, तुम लोगों ने क्या ...गिरी की हुई है। 5 साल तक मुझसे झूठ मत बोलना। मैं विधायक रहूं या न रहूं, किसी को नहीं छोड़ूंगा। जब तक मैं यहां हूं, सब पर नजर रखूंगा। बैठक के बाद धनेश अदलखा मुजेसर डिस्पोजल के निरीक्षण के लिए पहुंचे और सीवरेज समस्या को लेकर निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कोई अधिकारी या कर्मचारी लापरवाही बरतता हुआ पाया गया तो वह सलाखों के पीछे जाने के लिए तैयार रहे।

जम्मू-कश्मीर में दिखेगी नई सियासत

उमर की वापसी से बदलेगा राज्य का सियासी माहौल

» कांग्रेस व नेकां के गठजोड़ की दिखेगी ताकत

» विपक्ष के रूप में भाजपा भी बना सकती है दबाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू- कश्मीर में उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में नई सरकार बनने जा रही है। नेशनल कांफ्रेंस व कांग्रेस गठबंधन ने राज्य के विधानसभा चुनावों में बहुमत हासिल किया। गुरुवार को नेकां ने उमर को विधायकदल का नेता चुन लिया। धारा 370 हटने के बाद यह पहला चुनाव है। इसबार के चुनाव कई मायनों में अनाखे थे। यह पहली बार है कि राज्य की अवस्था आज पूर्ण राज्य की नहीं है। अबकि बार चुनाव हुआ है राज्य की स्थिति केंद्रदशासित व्यवस्था वाली है जिसमें एलजी की ताकत बढ़ी रहेगी। साथ ही ये जो नई सरकार बन रही है उसका कार्यकाल पांच वर्ष के लिए होगा जो पहले छह साल का था।

उधर इसबार जो परिणाम आए है उसमें जहां नेशनल कांफ्रेंस को लाभ हुआ है। सबसे ज्यादा नुकसान महबूबा की पार्टी पीडीपी को हुआ है। धारा 370 हाटाने वाली भाजपा को झटका तो लगा है पर लोगों ने दूसरी बड़ी पार्टी बनाकर उसको राहत जरूर दी है। सबसे बड़ी बात अयोध्या व चित्रकूट जैसे धार्मिक लोस सीटें हारने का गम झेल रही भाजपा माता वैष्णव देवी सीट पर जीत से उत्साह में आने का मौका मिल गया है। अतीत पर नजर डालें तो जम्मू-कश्मीर में आखिरी बार वर्ष 2014 में चुनाव हुए थे। वहां पर साल 2014 तक नेशनल कॉन्फ्रेंस के उमर अब्दुल्ला मुख्यमंत्री थे। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव 2024 के परिणाम एक बार फिर सबको चौंका दिए। यहां भाजपा की कसरत बेकार गई और कांग्रेस ने नेशनल कांफ्रेंस के सहारे बाजी मार ले गई। कहने का तातपर्य यह कि ताजा चुनाव परिणाम से जहां एक ओर पाकिस्तान-चीन परस्त स्थानीय सियासत को हवा देने वाली है। राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि इस चुनाव परिणाम से वहां सक्रिय हिन्दू हित चिंतक समूहों की भी बेचैनी बढ़ी है, क्योंकि एक बार फिर वहां पर वही अब्दुल्ला सरकार लौट रही है, जिसे जम्मू-कश्मीर के लिए हर मायने में अलग स्टेटस चाहिए। यानी धारा 370 की वापसी चाहिए। अतीत पर नजर डालें तो जम्मू-कश्मीर में आखिरी बार वर्ष 2014 में चुनाव हुए थे। वहां पर साल 2014 तक नेशनल कॉन्फ्रेंस के उमर अब्दुल्ला मुख्यमंत्री थे। लेकिन 2014 के विधानसभा चुनाव के बाद वहां बीजेपी और पीडीपी गठबंधन ने सरकार चलाई। इसी बीच 2019 में वहां से अनुच्छेद 370 को हटाया गया और उसे केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया। तब से वहां उपराज्यपाल शासन लागू है। उसके बाद अब जाकर साल 2024 में यहां चुनाव हुए, जिसमें तीन पीढ़ियों से यहां की सत्ता चला रहे अब्दुल्ला परिवार की नेशनल कॉन्फ्रेंस के गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला, जिसमें कांग्रेस भी शामिल है। घाटी में उनकी तूती बोलती है, इसलिए वहां उन्हें काफी सीटें मिलीं। हां, जम्मू के हिंदुओं ने बीजेपी को जमकर वोट दिया और अपनी राष्ट्रवादी भावनाओं का खुलकर इजहार किया।

कांग्रेस को वापसी के लिए करनी होगी मेहनत

आपको पता होना चाहिए कि देश पर सर्वाधिक समय तक राज करने वाली कांग्रेस की कभी जम्मू-कश्मीर में तूती बोलती थी। तब घाटी में कांग्रेस के सबसे बड़े नेता गुलाम नबी आजाद ने भी जम्मू-कश्मीर में अपनी सरकार चलाई। हालांकि ग्रुप 23 के चलते कांग्रेस से अलग होकर अपनी पार्टी बनाने के बाद गुलाम नबी आजाद व उनके समर्थकों का भी राजनीतिक वजूद खत्म हो गया। इसी तरह कांग्रेस का भी स्वतंत्र पार्टी के रूप में वजूद खत्म हो गया। इस बार जम्मूकश्मीर विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने गुलाम नबी आजाद की घरवापसी के लिए पहल की, लेकिन राहुल गांधी के सख्त रवैये के चलते खरगे बैक फुट पर चले गए। वहीं, नेशनल कॉन्फ्रेंस की सहयोगी पार्टी बनकर कांग्रेस 6 सीटें पाने में सफल रही। राहुल गांधी ने जम्मू और कश्मीर में कई रैलियां की। उधर, भारत जोड़ो यात्रा के दौरान भी उन्होंने अपनी ताकतवर मौजूदगी दिखाई थी। इसका असर यह रहा कि कांग्रेस को 6 सीटें मिलीं।

दस साल में बदला राज्य का सियासी परिदृष्य

आतंक के साए के बीच 10 साल बाद फिर से जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव हुए। इससे पहले 2014 से 2024 के बीच 10 साल में जम्मू-कश्मीर का पूरा राजनीतिक परिदृश्य ही बदल गया। साल 2019 में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद कश्मीर घाटी की राजनीतिक हवा ही पूरी तरह से बदल गई। केंद्र शासित प्रदेश के नए स्वरूप में आने वाले इस राज्य में आखिरकार 2024 में फिर से विधानसभा चुनाव का बिगुल बजा। और जब जम्मू व कश्मीर के चुनाव परिणाम आए तो नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन को स्पष्ट जनादेश मिला। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव 2024 में नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन ने 48 सीटें जीतीं। जबकि, बीजेपी ने 29 सीटों पर कब्जा किया। वहीं, महबूबा मुफ्ती की पीडीपी को सिर्फ 3 सीटें मिलीं। जबकि अन्य छोटी पार्टियों ने 10 सीटें हासिल कीं। यदि अलग अलग सीटों की बात की जाए तो नैशनल कॉन्फ्रेंस को 42 और कांग्रेस को 6 सीटें मिलीं। जबकि जेपीसी को 1, सीपीआई एम को 1, आम आदमी पार्टी को 1 और निर्दलीय को 7 सीटें मिली हैं।

हिंदू बहुल जम्मू में दिखा भाजपा का जलवा

हिंदु बहुल जम्मू में बीजेपी का प्रदर्शन पहले के मुकाबले अच्छा रहा। पार्टी ने यहां 29 सीटें जीतीं। बता दें कि जम्मू रीजन में 43 सीटें पड़ती हैं। भाजपा 68 प्रतिशत की स्ट्राइक रेट के साथ ये सीटें हासिल की है, जो बड़ी बात है।

इस तरह बीजेपी पूरे जम्मू-कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। वहीं, कश्मीर घाटी में बीजेपी एक भी सीट नहीं जीत सकी। 2014 के विधानसभा चुनाव में भी बीजेपी ने अपनी सभी 25 सीटें जम्मू में ही जीती थीं। तब भी कश्मीर में उसे एक भी सीट नहीं मिली थी। हालांकि इस बड़ी जीत के लिए यहां पीएम मोदी और केंद्रीय मंत्री अमित शाह सहित तमाम बड़े नेताओं और मंत्रियों की रैलियां हुईं। इसके बावजूद भी जम्मू के बाहर भाजपा को अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई। समझा जाता है कि जम्मू के हिंदुओं ने आतंक का दंश झेला है। अनुच्छेद 370 हटने पर पीडीपी और नेकां के बयानों को भी सुना है। इसलिए जब चुनाव आए तो हिंदुओं ने बीजेपी के पक्ष में जमकर वोट डाले। इससे बीजेपी का सियासी ग्राफ भी ऊंचा उठा।

बीजेपी से पीछे रहा एनसी का वोट प्रतिशत

जहां तक इनके वोट प्रतिशत का सवाल है तो बीजेपी को 25.64 प्रतिशत, नैशनल कॉन्फ्रेंस को 23.43 प्रतिशत, कांग्रेस को 11.97 प्रतिशत, पीडीपी को 8.87, आम आदमी पार्टी को 0.52 प्रतिशत, बीएसपी को 0.96 प्रतिशत और जदयू को 0.13 प्रतिशत वोट मिले हैं। इस चुनाव में कुल 63.45 फीसदी वोटिंग हुई है। बता दें कि विधानसभा की 90 सीटों के लिए तीन चरणों में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को मतदान हुए थे। ताजा चुनाव परिणाम से स्पष्ट होता है कि कभी भाजपा की करीबी रहीं पीडीपी नेत्री व पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को मतदाताओं ने खारिज कर दिया, ताकि वह भाजपा के साथ गठबंधन करने लायक ही नहीं बचें। उल्लेखनीय है कि साल 2014 में महबूबा मुफ्ती के पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद और बीजेपी ने मिलकर पहली बार गठबंधन किया और जम्मू-कश्मीर में

सरकार बनाई। यह वो नाजुक वक्त था जब 10 साल बाद बीजेपी ने फिर पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की सत्ता पर आसीन हुई थी। उसी समय लीक से हटकर बीजेपी ने पीडीपी से गठबंधन किया और चुनाव के बाद गठबंधन सरकार बनाई। हालांकि ये बेमेल सरकार रही। वहीं, मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद महबूबा मुफ्ती सीएम बनीं। चूंकि पीडीपी का एजेंडा बीजेपी के एजेंडे से बिल्कुल मेल नहीं खा रहा था और घाटी में पत्थरबाजी आम हो चली थी। इसलिए बीजेपी ने पीडीपी प्रमुख महबूबा से अपना पीछा छुड़ाना ही उचित समझा और ताबड़तोड़ उचित फैसले लिए।

भारत में आस्था रखने वाले कश्मीरी महबूबा से थे नाराज

भाजपा से गठबंधन तोड़ने के बाद महबूबा मुफ्ती की पार्टी पीडीपी भी अब्दुल्ला परिवार की पार्टी नेशनल कांफ्रेंस की लाइन पर ही चल रही थी, तो फिर उनकी पीडीपी को विधानसभा की 90 सीटों में से महज 3 सीटें ही क्यों मिल पाईं। शायद इसलिए कि जब कश्मीर घाटी में युवाओं ने पत्थरबाजी कर आतंक मचा रखा था, तब महबूबा की भाषा ऐसी थी कि किसी को भी हैरान कर दे। तब जिस तरह से उनकी वक्तव्यों में पाकिस्तान के प्रति झुकाव स्पष्ट देखने को मिलता था, उससे भारत में आस्था रखने वाले कश्मीरी क्षुब्ध दिखते थे। यही वजह है कि जब चुनाव आए तो मतदाताओं ने उन्हें सिरे से ही खारिज कर दिया, जो उनके लिए भी सियासी अजूबे की तरह है।

अनुच्छेद 370 हटने के बाद फारूक व उमर लगातार रहे हमलावर

साल 2014 से ही घाटी की राजनीति और जम्हूरियत का हवाला देने वाले फारूक अब्दुल्ला और उनके पुत्र उमर अब्दुल्ला अपनी विचारधारा पर दृढ़ता से खड़े रहे। देखा गया कि भले ही वो अटलजी की सरकार में केंद्रीय मंत्री थे, एनडीए में भी शामिल थे, लेकिन इसके बावजूद वे नरेंद्र मोदी की सरकार की नीतियों पर लगातार मुखरित रहे। पूरे देश में राहुल गांधी और जम्मू-कश्मीर में फारुख अब्दुल्ला-उमर अब्दुल्ला अपनी मुखरता के लिए ही जाने-पहचाने गए। वहीं, जब 2019 में अनुच्छेद 370 और 35 (ए) हटाया गया, तो फारूक अब्दुल्ला और उनके बेटे उमर अब्दुल्ला ने ही इस

पर मुखरता पूर्वक अपनी बात रखी। इससे पाक व चीन परस्त जम्मू-कश्मीर वासियों के हौसले बढ़े। बता दें कि साल 2014 में जम्मू-कश्मीर चुनाव से पहले अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस का ही राज था। तब उमर अब्दुल्ला ने कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर 5 जनवरी 2009 को गठबंधन सरकार बनाई थी। वहीं, जब अगस्त 2019 में केंद्र सरकार ने अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया। साथ ही जम्मू-कश्मीर का विशेष राज्य का दर्जा भी खत्म किया और इसे केंद्र शासित प्रदेश बना दिया। ये सब कुछ करने के बाद यह पूरा क्षेत्र उबल पड़ा, जिसके दृष्टिगत जम्मू-कश्मीर में कई महीनों तक विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लागू रहे। इन सबके बाद भी जब जम्मू कश्मीर में साल 2024 में विधानसभा चुनाव हुए तो नेशनल कॉन्फ्रेंस के अब्दुल्ला परिवार के पुनर्वापसी हुई, जबकि पीडीपी के महबूबा परिवार का सियासी सुफ?ा साफ हो गया।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

ट्रैफिक नियमों की जानकारी से रूक सकते हैं हादसे!

सड़क दुर्घटना में लोगों की मौत के आंकड़े दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं। कुछ घटनाएं अचानक घटती है तो कुछ वाहन चालकों की गलती से होता है। कुछ तो दुर्घटनाएं इसलिए हो जाती है क्यों वाहन का प्रयोग करने वालों यातायात के नियम की जानकारी तक नहीं थी। इस तरह की घटनाओं के घटने के बाद सरकारी तंत्र के कामकाज पर सवाल उठता है कि आखिर वे कैसे एसे लोगों को लाइसेंस प्रदान करवा देती है जिन्हे ट्रैफिक रूल्स के बारे में नही पता होता है। हालांकि समय-समय पर सरकारा द्वारा दावें किये जाते हैं कि वाहनों के चलाने के लिए जारी होने वाले ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने से पहले परीक्षा लेकर जांच परख कर ही लाइसेंस जारी होते हैं पर हकीकत कुछ और ही सामने आती है। एक सर्वे में यह सामने आया है कि हम जब सड़क पर चलने के कानून कायदों से ही अनजान है या आधी अधूरी जानकारी है। ऐसे में सड़क हादसों में कमी लाने की बात अपने आप में बेमानी हो जाती है।

एक और तो सड़क पर यातायात का दबाव बढ़ता जा रहा है तो दूसरी और नियमों की धज्जियां उड़ना आम है। यही कारण है कि साल दर साल सड़क हादसों में जिंदगी गंवाने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। एक सर्वे के अनुसार दिल्ली के ही अधिकांश लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की जानकारी नहीं होती। यहां तक कि एक तरफ से दूसरी और सड़क क्रास करने वाले अधिकांश लोग जहां ओवरब्रिज या अण्डरपास बना हुआ है उस तक से वाकिफ नहीं है। जेबरा क्रास के उपयोग की बात तो इसलिए कोई मतलब नहीं रखती की उस पर तो दो पहिया, चौपहिया वाहन रेड लाइट पर अपने वाहन को रोकने में कोई परहेज ही नहीं बरतते। यही कारण है कि क्या पैदल चलने वाले और क्या वाहन चालक सड़क हादसों के आसानी से शिका र हो रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली में निवास करने वाले 90 प्रतिशत लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की पूरी तरह से जानकारी नही है। साल दर साल सड़क हादसों और सड़क हादसों के कारण हताहत व मौत के मुहं में समाने वालों के आंकड़े कम होने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। 93 फीसदी लोगों को पता ही नहीं है कि ब्लेक स्पॉट कहां कहां है? सड़क पर चलने वाले 67 फीसदी लोग अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों को दलालों के माध्यम से घर बैठे ड्राइविंग लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सड़क हादसों में कमी की बात करना दिन में सपने देखने की तरह ही है। कुल मिलाकर सरकारों को इस पर गंभीर होकर सोचना होगा ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी आ सके।

“ एक सर्वे में यह सामने आया है कि हम जब सड़क पर चलने के कानून कायदों से ही अनजान है या आधी अधूरी जानकारी है। ऐसे में सड़क हादसों में कमी लाने की बात अपने आप में बेमानी हो जाती है। एक और तो सड़क पर यातायात का दबाव बढ़ता जा रहा है तो दूसरी और नियमों की धज्जियां उड़ना आम है। यही कारण है कि साल दर साल सड़क हादसों में जिंदगी गंवाने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कांग्रेस क्यों नहीं रोक सकी भाजपा को इतिहास बनाने से?

अभय कुमार दुबे

कांग्रेस मान कर चल रही थी कि हरियाणा चुनाव की पटकथा उसके हाथ से लिखी जा रही है। उसे यकीन था कि चुनाव नतीजों के दिन इस पर बनी फिल्म सुपरहिट साबित होगी। लेकिन, जैसा कि हमारी फिल्म इंडस्ट्री में कहावत है कि फिल्म हिट होगी या फ्लॉप यह कोई नहीं जानता। बहरहाल, हरियाणा का चुनाव एक बहुत बड़ा सबक है। खासकर उन लोगों के लिए जो संख्याबल और सामाजिक रुतबे के दम पर चुनावी मुहिम में जबरदस्त शोरगुल के जरिये अक्सर अपनी हवा बनाते हैं। लेकिन उनकी हवा के जीत में बदलने की कोई गारंटी नहीं होती। हरियाणा के संदर्भ में ऐसे लोगों को जाट समुदाय के रूप में देखा जा सकता है। उत्तर प्रदेश और बिहार के संदर्भ में यह भूमिका यादव समुदाय निभाता रहा है। पहले से बेहतर प्रदर्शन, लेकिन चुनावी जीत से दूर। बिहार में तेजस्वी की पार्टी और उप्र में अखिलेश की पार्टी का जो हश्र हुआ था, वही हश्र हरियाणा में कांग्रेस का हुआ।

दूसरा सबक उन लोगों के लिए है जिन्होंने एगजिट पोल करने वाली एजेंसियों पर एक बार फिर भरोसा करने की गलती की। सवाल यह है कि इन लोगों ने लोकसभा चुनाव में मुंह के बल गिरने वाली इन एजेंसियों की बात पर भरोसा क्यों किया? दरअसल, एगजिट पोल ठीक वही कह रहे थे जो हरियाणा का प्रभुत्वशाली जाट समुदाय कह रहा था या चाह रहा था। दोनों की भविष्यवाणियां मिल गईं, और उसका असर इतना जबरदस्त हुआ कि खुद भाजपा के भीतर चुनाव जीतने का यकीन कमजोर पड़ गया। और तो और, एक एजेंसी ने तो समाज के प्रत्येक वर्ग में कांग्रेस को भाजपा से बहुत-बहुत आगे दिखाया था। इसका असर यह हुआ कि मीडिया मंचों पर भाजपा के प्रवक्तता सहमे हुए दिखने लगे। तीसरा सबक उन राजनीतिक ताकतों के लिए है जो दलित जैसे कमजोर समुदायों के मतदाताओं को अपना जेबी वोट मान कर चलते हैं। इस चक्कर में वे इस मतदाता मंडल के नेताओं का तिरस्कार करने से भी नहीं हिचकते, और अंत में मुंह की खाते हैं।

चौथा सबक मेरे जैसे राजनीतिक समीक्षकों के लिए है जो अपने सयानेपन के बावजूद शोरगुल और तथाकथित हवा के फेर में फंस कर अपनी शुरुआती संतुलित राय बदल देते हैं और फिर बाद में पछताते हुए दिखते हैं। भाजपा चुनाव

जीत चुकी है। लेकिन क्या उसे ठीक-ठीक पता है कि वह क्यों जीती? कांग्रेस चुनाव हार चुकी है। लेकिन, क्या उसे साफ-साफ पता है कि वह क्यों हार गई? एक बड़ा कारण जरूर साफ लगता है कि कांग्रेस ने जाटदलित-मसु लमान का ऊपर से प्रभावशाली लगने वाला जो सामाजिक गठजोड़ बनाया था, उसने सौ फीसदी काम नहीं किया। दलित वोटों का एक हिस्सा जरूर छिटक कर भाजपा में गया है। भाजपा को वोट देने वाले दलितों ने स्वयं को गैरजाट मान कर वोट दिया। ओबीसी समुदाय का रुझान भी भाजपा के पक्ष में दिख रहा है। भाजपा के नेतृत्व में जाट प्रभुत्व को तोड़ने की जो मुहिम दस साल पहले शुरू हुई थी, वह अभी भी जारी है। यह शायद उस कांग्रेसी रणनीति की सजा है जिसके तहत पार्टी के टिकट बंटवारे (90 में से 72) पर हुड्डा की पसंद की खुली छाप लगी हुई थी। चुनाव प्रचार के दौरान यह फिकरा खूब दोहराया गया कि कांग्रेस में भले ही कुमार सैलजा और भूपिंदर सिंह हुड्डा के बीच खींचतान मची हो, पर जब जनता ही कांग्रेस को चुनाव जिताने पर अड़ गई है तो इस अदरूनी फूट से कोई अंतर नहीं पड़ने वाला। हकीकत यह निकली कि जनता ने एकतरफा वोट देने से इंकार किया। चुनाव आयोग के मुताबिक करारी टक्कर वाले इस चुनाव में दोपहर तीन बजे तक दोनों राष्ट्रीय पार्टियों को तकरीबन बराबर-बराबर (39 से 40 फीसदी के बीच) वोट मिले थे। स्थानीय पेचीदगियां किसी निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के पक्ष में गईं, और कहीं कांग्रेस तरफ झुक गईं। हमारी चुनाव प्रणाली जिस किस्म की है, उसमें कभी-कभी आधा-एक फीसदी वोट ज्यादा मिलने पर भी कोई पार्टी सीटों में पीछे हो जाती है। हरियाणा में मुसलमान-प्रधान क्षेत्रों में कांग्रेस के उम्मीदवार बहुत बड़े अंतराल (एक-डेढ़ लाख वोट) से जीते। शायद इसीलिए कांग्रेस का वोट प्रतिशत के भाजपा के नजदीक तो दिखा, पर सीटों को जिताने में उतना सक्षम नहीं निकला।

जम्मू-कश्मीर में भाजपा अपनी सरकार बनाने की मुहिम में नाकाम हो गई है। वह घाटी में वोटों की गोलबंदी बिल्कुलनहीं कर पाई, और जम्मू में भी उसे आशा के अनुरूप समर्थन नहीं मिला। अगर भाजपा ने साल-दो साल पहले ही वायदे के मुताबिक कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दे दिया होता, तो वह जम्मू में बड़ी जीत (35-36 सीटें) जीत कर अपनी दावेदारी मजबूत कर सकती थी। भाजपा ने घाटी में किसी स्थानीय ताकत से गठजोड़ भी कर लिया होता तो वह वहां कुछ कर पाटी। लेकिन, उसने स्वयं को अलगाव में रखना पसंद किया। यह उसकी बड़ी चूक हुई। इसके उलट राहुल गांधी ने चुनाव घोषित होते ही मौका ताड़ा और श्रीनगर जा कर नैशनल कांफ्रेंस से गठजोड़ कर लिया।

मौसम की तल्खी व अनियोजित विकास से दरकते पहाड़

पंकज चतुर्वेदी

फिलहाल बरसात थमी और उत्तराखंड के उत्तुंग पर्वतों पर विराजमान बद्रीनाथ और केदारनाथ की तरफ लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। वैसे मौसम विभाग बता चुका है कि इस साल अल-प्रभाव के कारण आने वाले तीन महीने कभी-कभी भारी बरसात होगी, इससे बेपरवाह पर्यटक और प्रशासन लोगों की आवाजाही को प्रोत्साहित कर रहा है। अभी दस दिनों पहले तक पहाड़ खिसकने, सड़कें टूटने और लोगों की मौत की खबरें आती रहीं। इस बार उत्तराखंड में सर्वाधिक भूस्खलन की घटनाएं दर्ज की गईं। राज्य के बड़े हिस्से में अभी भी सड़कें जर्जर हैं। यह कड़वा सच है कि इन सड़कों और उस पर आ रहे भारी यातायात के कारण पहाड़ दरक रहे हैं। उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल के चार जिलों में 1100 से अधिक सड़कें इस साल बारिश व आपदा की भेंट चढ़ गईं, जिसमें कोई 900 ग्रामीण क्षेत्रों की हैं। लैंड स्लाइड एटलस ऑफ इंडिया के मुताबिक उत्तराखंड के 13 में से 8 जिले भूस्खलन के लिहाज से अति संवेदनशील जिलों की सूची में आते हैं। गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला उत्तरकाशी भागीरथी नदी के किनारे वरुणावत पर्वत की तलहटी में बसा है।

यहां भूस्खलन का मतलब पूरे रिहायशी इलाके का खतरे की जद में आना है। वरुणावत पर्वत का पूरा क्षेत्र कई मायनों में बेहद संवेदनशील है। भूकंप के लिहाज से यह बेहद खतरनाक है। साल 1991 में यहां रिक्टर स्केल पर 6.1 तीव्रता का भूकंप आ चुका है। जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव के चलते पहाड़ों की पारंपरिक रिमझिम बरसात की जगह अब अचानक बहुत भारी बरसात हो रही है और इन सब का मिला-जुला कारण है कि मजबूत चट्टानों वाले पहाड़ भी अर्रा कर गिर रहे हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के डाटा के अनुसार 1988 से 2023 के बीच उत्तराखंड में भूस्खलन की 12,319 घटनाएं हुईं। सन् 2018 में प्रदेश में भूस्खलन की 216 घटनाएं हुई थीं जबकि 2023 में यह संख्या पांच गुना बढ़कर 1100 पहुंच गई।

2022 की तुलना में भी 2023 में करीब साढ़े चार गुना की वृद्धि भूस्खलन की घटनाओं में देखी गई है। इस साल अगस्त-24 तक बरसात के दौरान भूस्खलन की 2946 घटनाएं दर्ज की गईं। ऐसा भी नहीं कि इस बार बरसात अधिक हुई हो। मानसूनी बारिश सामान्य कोटे (1060 मिमी) से महज 2 प्रतिशत ही ज्यादा हुई, जबकि भूस्खलन की घटनाएं पिछले साल से करीब दोगुनी हैं। अगस्त, 2024 तक भूस्खलन के चलते 67 लोगों की मौत हुई, जो कि बीते तीन साल में सर्वाधिक है। उत्तराखंड में 40 से अधिक गांव और शहरी कस्बे ऐसे हैं जहां घरों में दरारें आ चुकी हैं या फिर वहां धंसाव का खतरा है। इस साल नैनीताल के निकट सूपी गांव, टिहरी के तिनगढ़, चमोली के कनियाज और भाटगांव नामेतोक गांव में भी धंसाव और भूस्खलन के मामले आ चुके हैं। चीन सीमा के करीब नीती घाटी के जुग्जू गांव के लोग बीते दो सालों से बेशुमार भूस्खलन से तंग हैं। उत्तराखंड के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल नैनीताल का अस्तित्व ही भूस्खलन के कारण खतरे में है।

याद करें सन् 1880 में यहां भयानक पहाड़ क्षरण हुआ था, जिसमें कोई डेढ़ सौ लोग मारे गये थे, उन दिनों नैनीताल की आबादी बमुश्किल दस हजार थी, तब की ब्रितानी हुकूमत ने पहाड़ गिरने से सजग होकर नए निर्माण पर तो रोक लगाई ही थी, शेर का डांडा पहाड़ी पर तो घास काटने, चरागाह के रूप में उपयोग करने और बागवानी पर प्रतिबंध के साथ बड़े स्तर पर वृक्षारोपण हुआ था। कुमाऊं विवि के भूवैज्ञानिक प्रो. बीएस कोटलिया बताते हैं कि नैनीताल और नैनीझील के बीच से गुजरने वाले फॉल्ट के एक्टिव होने से भूस्खलन और भूधंसाव की घटनाएं हो रही हैं। शहर में लगातार बढ़ता भवनों का दबाव और भूगर्भीय हलचल इसका कारण हो सकते हैं। उत्तराखंड सरकार के आपदा प्रबंधन विभाग और विश्व बैंक ने सन् 2018 में एक अध्ययन करवाया था जिसके अनुसार छोटे से उत्तराखंड में 6300 से अधिक स्थान भूस्खलन जोन के रूप में चिन्हित किये गये।

रिपोर्ट कहती है कि राज्य में चल रही हजारों करोड़ रुपयों की विकास परियोजनाएं पहाड़ों को काटकर या जंगल उजाड़ कर ही बन रही हैं और इसी से भूस्खलन जोन की संख्या में इजाफा हो रहा है। दुनिया के सबसे युवा और जिंदा पहाड़ कहलाने वाले हिमालय के पर्यावरणीय छेड़छाड़ से उपजी सन् 2013 की केदारनाथ त्रासदी को भुलाकर उसकी हरियाली उजाड़ने की कई परियोजनाएं उत्तराखंड राज्य के भविष्य के लिए खतरा बनी हुई हैं। गत नवंबर, 2019 में राज्य की कैबिनेट से स्वीकृत नियमों के मुताबिक कम से कम दस हेक्टेयर में फैली हरियाली को ही जंगल कहा जाएगा। यही नहीं, वहां न्यूनतम पेड़ों की सघनता घनत्व 60 प्रतिशत से कम न हो और जिसमें 75 प्रतिशत स्थानीय वृक्ष प्रजातियां उगी हों। जाहिर है कि जंगल की परिभाषा में बदलाव का असल इरादा ऐसे कई इलाकों को जंगल की श्रेणी से हटाना है जो कि कथित विकास की राह में रोड़े बने हुए हैं। उत्तराखंड में भूस्खलन की तीन चौथाई घटनाएं बरसात के कारण हो रही हैं, इससे स्पष्ट है कि अनियमित और अचानक तेज बारिश आने वाले दिनों में पहाड़ के लिए अस्तित्व का संकट बनेगी।

दशहरा

अधर्म पर धर्म की विजय...

दशहरा जिसे विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है, देश में हिंदू समुदाय द्वारा मनाए जाने वाले सबसे बड़े त्योहारों में से एक है। यह नवरात्रि के अंत में मनाया जाता है, जिसके कारण हर साल तिथि बदलती रहती है। हिंदू कैलेंडर के कार्तिक महीने के तहत, यह त्यौहार इस महीने के 10वें दिन मनाया जाएगा । इस बार यह 12 अक्टूबर को पड़ेगा। दशहरा पर्व आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। ये वही दिन है जब भगवान राम ने लंकापति रावण का वध किया था। इसलिए इस दिन लोग रावण दहन करते हैं। ये पर्व हमें ये संदेश देता है कि अच्छाई की जीत होकर ही रहती है। इस दिन कई जगह आयुध पूजा भी की जाती है।

पूजा मुहूर्त

इस साल दशहरा 12 अक्टूबर को मनाया जाएगा। दशमी तिथि 12 अक्टूबर की सुबह 10 बजकर 58 मिनट से 13 अक्टूबर की सुबह 9 बजकर 8 मिनट तक रहेगी। दशहरा पूजा विजया मुहूर्त 12 अक्टूबर की दोपहर 02:03 से 02:49 बजे तक रहेगा। वहीं अपराह्न पूजा का समय 01:17 से 03:35 तक रहेगा।

इस बार दशहरा शनिवार को मनाया जायेगा

दशहरा का ऐतिहासिक महत्व

देश भर में लोग अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार दशहरा या विजयादशमी मनाते हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक के लोगों की इस त्योहार को लेकर अलग-अलग मान्यताएं हैं। हालांकि, सभी कहानियां बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाती हैं। महाकाव्य रामायण के अनुसार, जब भगवान राम वनवास में थे, तब रावण ने उनकी पत्नी देवी सीता का अपहरण कर लिया और उन्हें अपने राज्य लंका ले गया। सीता को बचाने के लिए राम ने अपने भाई लक्ष्मण , भगवान हनुमान और बंदरों की सेना की मदद से लंका पर हमला किया। युद्ध के दसवें दिन, दशानन को अयोध्या के राजकुमार राम ने हराया था । त्योहार का नाम दो संस्कृत शब्दों दश (दस) और हर (हार) से आया है। यह उत्सव गर्मियों से सर्दियों में बदलाव का भी प्रतिनिधित्व करता है।

राम की रावण पर जीत का है प्रतीक

दशहरा यानी विजयादशमी पर्व राक्षस रावण पर भगवान श्री राम की विजय के रूप में मनाया जाता है। तो वहीं इस दिन माता दुर्गा ने दानव महिषासुर का वध भी किया था। इन दो कारणों से हिंदू धर्म में इस पर्व का विशेष महत्व माना जाता है। नेपाल में दशहरा को दशैं के रूप में मनाया जाता है। इस दिन रावण दहन करने की भी परंपरा निभाई जाती है। इस दिन देश भर में जुलूस निकाले जाते हैं, जिसमें दुर्गा, सरस्वती, गणेश, लक्ष्मी और अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को पास की नदियों या समुद्र में ले जाकर विसर्जित कर दिया जाता है। इसके अलावा, बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में रावण का पुतला जलाया जाता है और आतिशबाजी जलाकर जश्न मनाया जाता है। साथ ही, दिवाली या दीपावली त्यौहार की तैयारियां भी शुरू हो जाती हैं।

दशहरा की परंपरा और अनुष्ठान

दशहरा पूरे भारत में कई अलग-अलग परंपराओं और रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। दिल्ली, मैसूर, वाराणसी, कुल्लू और कोलकाता जैसे शहर इस त्यौहार को धूमधाम से मनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। भगवान राम के अनुयायी अपनी प्रार्थना करने के लिए उन्हें समर्पित मंदिरों में जाते हैं।

मेले का आयोजन

दशहरा या विजयादशमी का त्यौहार देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। कुछ इलाकों में लोग सार्वजनिक जुलूस निकालते हैं, तो कुछ इलाकों में वे रामलीला में हिस्सा लेते हैं। कुछ शहरों में रावण दहन का आयोजन किया जाता है। इस त्यौहार की सबसे खास बात पटाखे फोड़ना और दावत खाना है। इस अवसर पर भारत में कई जगहों पर रंग-बिरंगी प्रदर्शनी और मेले आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा, लोग दशहरा के त्यौहार से दस दिन पहले से ही पूरी रामायण का मंचन करते हैं। 2024 में दशहरा की छुट्टियों के दौरान भी उत्सव मनाया जाता है।

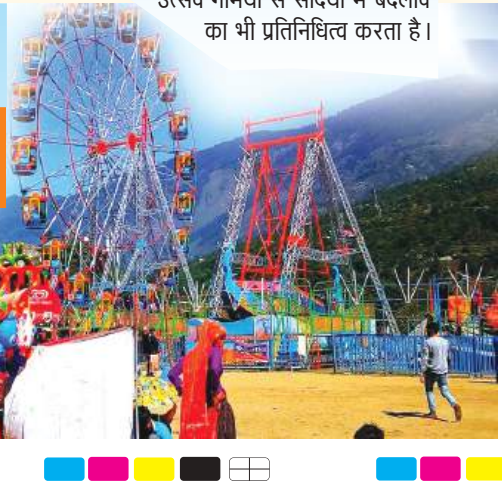

हंसना मना है

दुकानदार- मैंने आपको दुकान की एक-एक चप्पल दिखा दी, अब तो एक भी बाकी नहीं है। महिला- वो सामने वाले डिब्बे में क्या है? दुकानदार-बहन, रहम कर थोड़ा, उसमें मेरा खाना है?

लड़का आधा किलो जलेबी खाके बिना पैसे दिए जाने लगा, दूकानदार-ओ भाई पैसे? लड़का- नहीं हैं! दुकानदार ने उसे कूट दिया? वो उठकर कपड़े झाड़ते हुए बोला.. भैया इसी भाव में एक किलो और तौल दो?

दो चूहे पेड़ पर बैठे थे, नीचे से एक हाथी गुजरा। एक चूहा हाथी पर गिर गया। तभी दूसरा चूहा बोला, दबा कर रख साले को, मैं भी आता हूं।

एक आश्रम में सात साधु सात चटाई पर बैठे हुए थे, तभी एक आदमी आश्रम आया और सबसे बड़े साधु से पूछा- बाबा, बीवी कंट्रोल नहीं होती है क्या करूं? साधु (छोटे साधु से)- एक चटाई और लगा दे इस भाई के लिए...

कहानी — सच्चा साधु कौन है

एक साधु को एक नाविक रोज नदी के इस पार से उस पार ले जाता था, बदले मैं कुछ नहीं लेता था, वैसे भी साधु के पास पैसा कहां होता था। नाविक सरल था, पढा लिखा तो नहीं, पर समझ की कमी नहीं थी। साधु रास्ते में ज्ञान की बात कहते, कभी भगवान की सर्वव्यापकता बताते और कभी अर्थसहित श्रीमदभगवद्गीता के श्लोक सुनाते। नाविक मछुआरा बड़े ध्यान से सुनता, और बाबा की बात हृदय में बैठा लेता। एक दिन उस पार उतरने पर साधु नाविक को कुटिया में ले गये और बोले, वत्स, मैं पहले व्यापारी था, धन तो कमाया था, पर अपने परिवार को आपदा से नहीं बचा पाया था। अब ये धन मेरे किसी काम का नहीं, तुम ले लो, तुम्हारा जीवन संवर जायेगा, तेरे परिवार का भी भला हो जाएगा। नहीं बाबाजी, मैं ये धन नहीं ले सकता, मुफ्त का धन घर में जाते ही आचरण बिगाड़ देगा। कोई मेहनत नहीं करेगा, आलसी जीवन लोभ लालच, और पाप बढ़ायेगा। आप ही ने मुझे ईश्वर के बारे में बताया, मुझे तो आजकल लहरों में भी कई बार वो नजर आया। जब मैं उसकी नजर में ही हूं, तो फिर अविश्वास क्यों करूं, मैं अपना काम करूं, और शेष उसी पर छोड़ दूं।

शिक्षा- यह प्रसंग एक सवाल छोड़ गया, इन दोनों पात्रों में साधु कौन था? एक वो था, जिसने दुःख आया, संन्यास लिया, धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया, याद किया, और समझाने लायक स्थिति में भी आ गया, फिर भी धन की ममता नहीं छोड़ पाया, सुपात्र की तलाश करता रहा। और दूसरी तरफ वो निर्धन नाविक, सुबह खा लिया, तो शाम का पता नहीं, फिर भी पराये धन के प्रति कोई ललक नहीं। संसार में लिप्त रहकर भी निर्लिप्त रहना आ गया, सन्यास नहीं लिया, पर उस का ईश्वरीय सत्ता में विश्वास जम गया। श्रीमदभगवद्गीता के श्लोक को ना केवल समझा बल्कि उन्हें व्यवहारिक जीवन में कैसे उतारना है ये सीख गया, और पल भर में धन के मोह को ठुकरा गया। वास्तव में संत कौन?

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — आज चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रह सकता है।

वृषभ — कोर्ट व कचहरी में लाभ की स्थिति बनेगी। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। पिछले लंबे समय से रुके कार्य बनेंगे।

मिथुन — भूमि व भवन संबंधित कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे।

कर्क — रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। शत्रु परास्त होंगे। व्यापार ठीक चलेगा।

सिंह — आज बेवजह दौड़धूप बनी रहेगी। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कोई शोक समाचार मिल सकता है।

कन्या — सामाजिक कार्य करने का मन बनेगा। मान-सम्मान मिलेगा। निवेश शुभ रहेगा। मेहनत का फल मिलेगा।

तुला — पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। ऐश्वर्य के साधनों पर व्यय होगा।

वृश्चिक — जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी।

धनु — घर की कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। यात्रा के दौरान आभूषण या कोई खास चीज भूलें नहीं।

मकर — आज डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। यात्रा लाभदायक रहेगी। किसी बड़ी समस्या से सामना हो सकता है।

कुम्भ — आपके सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कोई बड़ी योजना फलीभूत होगी। प्रयास अधिक करना पड़ेंगे।

मीन — प्रापर्टी विवाद में कानूनी सहयोग मिलेगा। लाभ में वृद्धि होगी। रुके कार्यों में गति आएगी।

तीन पार्ट्स में रिलीज होगी रणवीर कपूर की रामायण

बॉलीवुड में आजतक कई फिल्ममेकर्स आए हैं जिन्होंने रामायण जैसी पौराणिक कथा पर फिल्म बनाने की कोशिश की है, लेकिन उनमें से कुछ ही ऐसे रहे हैं जो कामयाब हो पाए हैं। कई रामायण को आज के समय के हिसाब से ढालकर दिखाने की कोशिश में चूक गए, तो कई बहुत कुछ अलग दिखाने के चक्कर में।

पिछले साल आई फिल्म आदिपुरुष भी रामायण की कहानी पर ही बनाई गई थी जिसे आज के समय के हिसाब से बनाकर दर्शकों को दिखाने की कोशिश की गई थी लेकिन ऑडियंस ने उसे साफ नकार दिया। फिल्म का बजट काफी बड़ा बताया गया था। भारी ङ्कस्न्नङ्ग के कारण फिल्म में स्पेशल इफेक्टस डालने की कोशिश की गई लेकिन वो नाकाम रहीं। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गई थी।

लेकिन कुछ समय से लोगों में रामायण को लेकर क्रेज फिर दोबारा जाग गया है और ये क्रेज दंगल फिल्म के डायरेक्टर नितेश तिवारी ने पैदा किया है। काफी समय से फिल्ममेकर रामायण पर काम कर रहे हैं। कुछ समय पहले उनकी फिल्म के सेट से कुछ तस्वीरें भी लीक हुई थीं जिसके बाद से फिल्ममेकर ने सेट पर फोन लाने से इनकार कर दिया था। फिल्म में रणबीर कपूर और साई पल्लवी मेन लीड में हैं। दोनों भगवान राम और मां सीता का किरदार निभाते नजर आएंगे।

तीन पार्ट में होगी रामायण

ऐसा माना जा रहा है कि रामायण को फिल्म मेकर नितेश तिवारी तीन पार्ट में बनाने का सोच रहे हैं। फिल्म के पहले पार्ट की शूटिंग फिलहाल मुंबई में फिल्म सिटी में हो रही है। सूत्रों का कहना है, नितेश तिवारी की रामायण तीन पार्ट में बनाई जाएगी जिसकी पहली फिल्म राम और सीता की कहानी से लेकर सीता के अपहरण तक दिखाई जाएगी। दूसरी फिल्म सिर्फ हनुमान की कहानी पर बनाई जाएगी जिसमें हनुमान का किरदार सनी देओल निभाएंगे। हालांकि हनुमान के इतिहास और कहानी के बारे ज्यादा नहीं मालूम है, ये फिल्म वनवास और सीता के अपहरण से उनके कनेक्शन पर होगी और तीसरी फिल्म में रावण का सीता के अपहरण के बाद की कहानी को दिखाया जाएगा।

हनुमान का किरदार निभायेंगे सनी देओल

बॉलीवुड मसाला

बॉलीवुड | मन की बात

मैं जो कुछ भी हूं, अपनी मां की वजह से हूं: ध्वनि भानुशाली

सबसे कम उम्र में सबसे तेज 100 करोड़ यूट्यूब व्यूज पाने वाली गायिका ध्वनि भानुशाली ने इस शुक्रवार बतौर हीरोइन बड़े परदे पर दस्तक दी है। महिला सशक्तिकरण की बात करती उनकी फिल्म कहां शुरू कहां खतम ने कम बजट की फिल्मों के कारोबार की एक नई राह भी खोली है। ध्वनि ने कहा, मुझे लगता है कि युवा पीढ़ी को अपनी जिम्मेदारी का एहसास अब बहुत शुरू से हो जाता है। तमगों के पीछे हम नहीं भागते लेकिन, हमारी मेहनत को जब ऐसा कोई नाम या इनाम मिलता है तो सिर्फ एक कलाकार ही नहीं बल्कि उसे यहां तक लाने में जो भी लोग हमसफर रहे होते हैं, सबको इस बात पर नाज होता है। गायकी अपने आप में एक बड़ी जिम्मेदारी है और ये सुर में रहे, ताल में रहे, इसके लिए लगातार रियाज करते रहने की ये सीख भी देती है। सोशल मीडिया और कॉलेज के युवाओं के बीच ध्वनि भानुशाली का नाम मॉडर्न डे पॉप आइकन के रूप मे लिया जाता है, इस कामयाबी में आपके परिवार का कितना बड़ा हाथ है? मैं आज जो भी हूं, जहां भी अपनी मां रिंकू भानुशाली की वजह से हूं। वह मुझे हर क्लास, हर ट्रेनिंग पर लेकर जाती रहीं। मेरे साथ हरदम मौजूद रहीं। मैं अपने पूरे परिवार की एहसानमंद हूं कि उन्होंने मेरे हर फैसले में मेरा साथ दिया और ये भरोसा दिलाया कि मैं जो करना चाहती हूं वह कर सकती हूं, वे सब हरदम मेरे पीछे खड़े मिलेंगे। जब आपने गायिका बनने का फैसला किया तो घरवालों की प्रतिक्रिया क्या रही? और गायकी आपने कब से सीखनी शुरू की। कौन कौन लोग आपके गुरु रहे? गायक बनने का मेरा फैसला किसी के लिए भी चौंकाने वाला इसलिए नहीं रहा क्योंकि मैंने दूसरे गायकों के गाने (कवर वर्जन) गाकर अपनी शुरुआत काफी पहले कर दी थी। फिर मैंने अपनी गुरु गीता जोशी जी से शास्त्रीय संगीत की बाकायदा शिक्षा प्राप्त की। उनके साथ अब भी मैं सीखने जाती हूं। कुछ और टीचर भी हैं जिनका साथ मुझे पश्चिमी संगीत सीखने में मिलता रहा है।

रोमांटिक सीन्स से मुझे कोई परहेज नहीं: आदित्य

आदित्य सील हालिया रिलीज फिल्म अमर प्रेम की प्रेम कहानी को लेकर चर्चा में हैं। इसमें उन्होंने गे किरदार निभाया है। उनके पार्टनर बने हैं सनी सिंह। हार्दिक गज्जर के निर्देशन में बनी मूवी में स्टारकिड प्रनूतन बहल भी अहम रोल में दिखीं। आदित्य ने अपने रोल, अपकमिंग प्रोजेक्ट्स और सनी सिंह संग यारी पर बात की। जानते हैं एक्टर ने क्या कुछ कहा।

गे किरदार निभाना कितना मुश्किल था। डर लगा कि फैंस अपनाएंगे या नहीं?

सच कहूं तो, जितना मुश्किल मैंने सोचा था उतना मेरे लिए हुआ नहीं। एक बार जब मैं कैरेक्टर में घुस गया तो ऐसी कोई मुश्किलें आई नहीं। सनी संग काम करना काफी आसान था। हमारी एक हिस्ट्री भी रही है। हम दोनों कई सालों तक एक ही एरिया में रहते थे। तीन मिनट की दूरी पर हमारा घर था, लेकिन उस दौरान हम कभी मिले नहीं थे। फिल्म की शूटिंग के दौरान हमारे बीच उस वक्त का कॉमन बॉन्ड था। हम वहां की बातें करते थे। शूट के वक्त हमारा बॉन्ड अच्छा हो गया था। इसलिए शूट के वक्त मुश्किल नहीं हुआ, एक बार कैरेक्टर में घुसते हैं तो जेंडर हटा देते हैं। ये लव स्टोरी है। उसमें लड़का हो या लड़की, रिप्लेस हो सकता है। इस फिल्म में काम कर अच्छा लगा। ये रोल करते वक्त मुझे कोई डर नहीं लगा। मैंने सोचा मेरा फैन बेस और बढ़ जाएगा। स्न्नक्क्ष कम्यूनिटी के लोग मुझे और पसंद करना शुरू करेंगे। उनकी तरफ से काफी मैसेजेस भी आए हैं। जब मैं स्टोरी पढ़ रहा था हमें जहन में ये चीज ध्यान रखनी थी कि हम किसी ऑफेंड ना करें। हम इन चीजों को नॉर्मलाइज करना चाहते थे। इसलिए हमने लव स्टोरी बनाई है। कॉमेडी स्टोरी बनाई है। जिसमें दिखाया कि फैमिली ने एक्सेप्ट तो कर लिया है, लेकिन इसके बाद क्या बखेड़ा खड़ा होता है। हमें ज्यादा स्ट्रगल दिखाना नहीं था, जहां परिवार की मंजूरी के लिए लड़ाई कर रहे हो। हमें उससे एक कदम आगे जाकर होने वाली चीजों को दिखाना था।

यहां सांपों के साथ लोग करते हैं योग, बदन पर रेंगते हैं अजगर

पिछले कुछ सालों से योग पूरे विश्व में बहुत चर्चा में आ गया है। हालांकि, योग कोई नई क्रिया नहीं है। हजारों सालों से भारत में योग गुरू इसको करते आ रहे थे। विदेशों में कई योग गुरू विदेशियों को सालों से योग सिखा रहे हैं। धीरे-धीरे योग करने के तरीके में लोगों ने अपने-अपने हिसाब से परिवर्तन कर दिए। कुछ वक्त पहले कुत्तों के साथ योग करना काफी प्रचलित हुआ था, मगर अमेरिका में तो अब एक नए तरीके का योगा चर्चा में है। यहां पर लोग सांप के साथ योग कर रहे हैं। सांप उनके बदन पर रेंगते हैं। चलिए आपको बताते हैं कि आखिर ऐसा योग क्यों हो रहा है और इसे करने के लिए लोगों को कितनी कीमत चुकानी पड़ती है। न्यूयॉर्क पोस्ट के अनुसार कैलिफोर्निया के कोस्टा मीसा में 'लग्जरी योगा' नाम का एक स्टूडियो है। ये योग में एक नया ट्रेंड सेट करने की फिराक में है। इस स्टूडियो में लोगों को स्नेक योगा सिखाया जा रहा है, जिसमें लोग सांपों के साथ योग करते हैं। आप सोचेंगे कि आखिर ये योग कौन करता होगा? इस योग को मुख्य रूप से वो लोग करते हैं, जिन्हें सांपों से बहुत डर लगता है। इस योग में अजगर शरीर पर रेंगते हैं। इससे लोगों के अंदर से सांपों के डर को दूर भगाया जाता है। योग के दौरान जब सांप शरीर पर रेंगते हैं, तो लोग अपनी सांस को कंट्रोल करने का हुनर सीखते हैं, जिससे वो अपने डर को खत्म कर सकें। टेस काओ, अपने पति हुए काओ के साथ इस स्टूडियो को चलाती हैं। दोनों के पास कई अजगर हैं, जिन्हें वो पालते हैं। 1 सेशल 45 मिनट का होता है, जिसकी फीस है 160 डॉलर (13,400 रुपये)। कपल के पास 6 सांप हैं, जिनके नाम क्रिस्टल के नाम पर हैं। कपल का कहना है कि उनके सांप बहुत सीधे हैं और आसानी से लोगों से दोस्ती कर लेते हैं। लोग घबराएं नहीं, इसके लिए सेशल से पहले एक ओरिएंटेशन क्लास अरेंज की जाती है, जिसमें सांपों को हैंडल करने के तरीके बताए जाते हैं। उन्होंने बताया कि आज तक सांप ने किसी को भी नहीं काटा है। उन्होंने बताया कि उनके सांप 4 साल तक के हैं। बहुत से लोग सिर्फ इसे अनुभव करने के लिए क्लास लेते हैं। कुछ पोजीशन में लोग जमीन पर लेट जाते हैं और सांप उनके ऊपर रेंगते हैं। लोग सांपों के मूवमेंट या बदन को कसने की क्रिया को गलत न समझ लें, इसके लिए पहले से उन्हें अच्छी ट्रेनिंग दी जाती है।

अजब-गजब | यहां का हर कोई है शाकाहारी कोई नहीं पीता है शराब

इस गांव में करोड़पति भी रहते हैं कच्चे घर में

भारत मान्यताओं का देश है। यहां के लोग हजारों सालों से अलग-अलग प्रकार की मान्यताओं का पालन करते हैं। यहां कई गांव-शहर हैं जहां पर आपको ऐसे रीति-रिवाज देखने को मिलेंगे, जो आपके लिए अंधविश्वास हो सकते हैं, पर इन जगहों के लिए लोगों के लिए बेहद खास होते हैं। ऐसा ही एक गांव राजस्थान में है, जहां पर हर किसी के घर कच्चे हैं। जो लोग अमीर हैं, यहां तक कि करोड़पति लोग भी इस गांव में रह रहे हैं, वो भी कच्चे मकानों में रहते हैं।

इंस्टाग्राम अकाउंट @ask_bhai9 पर हाल ही में एक वीडियो पोस्ट किया गया है जो राजस्थान के एक गांव का है। इस गांव का नाम है देवमाली जो राजस्थान के ब्यावर जिले में है। इस गांव की खासियत ये है कि यहां पर हर कोई कच्चे मकान में रहता है। जो लोग अमीर हैं, करोड़पति भी हैं, वो भी पक्के मकानों में नहीं रहते। इसके अलावा गांव से जुड़ी ऐसी कुछ और खास बातें भी हैं जो इसे खास बनाती हैं।

सबसे बड़ी बात ये है कि इस गांव में कोई भी शराब नहीं पीता है। यहां तक कि गांव में हर कोई शाकाहारी है। वीडियो में तो ये भी दावा किया गया है कि गांव में कोई अपने घरों में ताला नहीं लगाता है। हालांकि, एक मकान में ताला लगा नजर आ रहा है। इसके अलावा बहुत से लोग आते-जाते दिख रहे हैं। गांव में आप देख सकते हैं कि हर मकान मिट्टी का है। देवमाली में गुर्जर समाज के लोग रहते हैं। भगवान देवनारायण की आराधना ये सभी लोग करते हैं। लोगों की मानें तो जब भगवान देवनारायण यहां आए थे तो वे ग्रामीणों की सेवा से खुश हुए थे। तब लोगों ने कुछ नहीं मांगा। इस वजह से भगवान ने जाते-जाते उन्हें आशीर्वाद दिया कि गांव में हमेशा सुख-समृद्धि और शांति रहेगी मगर कोई भी अपनी छत पक्की न करवाए। उसके बाद से किसी ने भी घर को पक्का नहीं करवाया।

इस वीडियो को 5 करोड़ से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं और कई लोगों ने कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दी है। लोगों ने कहा कि गांव बहुत प्यारा लग रहा है। वहीं एक ने कहा कि वो इस गांव में गया है। एक ने कहा कि काश उनका भी गांव ऐसा ही हो!

पार्टी हित को नजरअंदाज करने से हारे हरियाणा : राहुल गांधी

» हरियाणा पर कांग्रेस की समीक्षा बैठक में हुई चर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हरियाणा चुनाव में हार को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बड़ा बयान दिया है। राहुल गांधी ने बताया है कि हरियाणा के चुनाव में कांग्रेस क्यों हारी है, चुनाव के परिणामों के बाद कांग्रेस ने समीक्षा बैठक रखी, जिसमें उन्होंने कहा है कि हरियाणा में हार इसलिए हुई क्योंकि पूरे चुनाव में नेताओं ने पार्टी से ऊपर अपने हितों को रखा। कांग्रेस की इस बैठक में भूपेंद्र सिंह हुड्डा और पीसीसी अध्यक्ष सूरजभान को भी बुलाया गया था, लेकिन वे नहीं आए। वरिष्ठ नेता अजय माकन ने कहा कि सभी न्यूज चैनलों पर एग्जिट पोल आए, नतीजे अप्रत्याशित थे किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि ऐसे नतीजे आएंगे।

एग्जिट पोल और नतीजे में जमीन आसमान का फर्क था। उन्होंने बताया कि अलग-अलग कारणों पर चर्चा की गई। इस समीक्षा बैठक के बाद आगे और विस्तार से चर्चा होगी और कार्रवाई की जाएगी। समीक्षा बैठक में कुमारी सैलजा और राज्यसभा सांसद रणदीप सुरजेवाला को नहीं बुलाया गया था। बैठक में लालू यादव के समधी और कांग्रेस नेता कैप्टन अजय यादव भी शामिल हुए थे। चुनाव के दौरान हुड्डा कैंप और सैलजा कैंप के बीच लगातार हुटबाजी की खबरें सामने आ रही थी। दोनों ही नेता सीएम पद की दौड़ में खुद को आगे बताने में जुटे हुए थे। दोनों गुटों के बीच तकरार को लेकर खूब सुर्खियां बनी थी।

कांग्रेसियों की शिकायत पर निर्वाचन विभाग निष्पक्ष जांच करे : पायलट

सचिन पायलट ने कहा कि जीतने अनुमान, उम्मीद, सारे सर्वे और फीडबैक जिस दिशा में थे, वैसे परिणाम नहीं आए। हरियाणा सहित पूरे देश में सभी जानते थे कि कांग्रेस वहां अच्छे बहुमत से सरकार बनाने वाली है। विधानसभा चुनाव के परिणाम को लेकर शुरुआत में रुझान कांग्रेस के पक्ष में थे और कुछ घंटे बाद रुझान अलग तरीके के थे। इस सिलसिले में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों ने निर्वाचन आयोग में मतदान प्रक्रि या की शिकायत हेतु ज्ञापन दिए हैं। हरियाणा में 20 उम्मीदवारों को परिणाम को लेकर संतुष्टि नहीं है। कांग्रेसियों की शिकायत पर निर्वाचन विभाग निष्पक्ष जांच करेगा। पायलट ने कहा कि हरियाणा में 9 साल बाद मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर को पद से हटाया गया, अगर हरियाणा सरकार का 9 साल का कार्यकाल बहुत अच्छा था तो मुख्यमंत्री को पद से हटाने की जरूरत नहीं थी।

हरियाणा के नेताओं को बाद में बुलाया जाएगा : माकन

अजय माकन ने कहा कि आज सुबह बैठक को लेकर यह निर्णय लिया गया कि ये बैठक केवल वरिष्ठ पदाधिकारियों तक ही सीमित रहेगी और हरियाणा के नेताओं को बाद में बुलाया जाएगा, सूत्रों के मुताबिक जल्द ही एक फैक्ट चेक टीम गठित की जाएगी। अजय माकन ने बताया कि आज की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल, अशोक गहलोत और साथ में आईसीसी के सेक्रेटरी दीपक बावरिया भी जूम कॉल के जरिए बैठक में जुड़े सभी लोगों ने विस्तार से हरियाणा के चुनाव की समीक्षा की।

सीएम नीतीश का काम बोलता है और तेजस्वी का ट्वीट : अशोक चौधरी

» 26 नंवबर को जदयू करेगा भीम संसद का आयोजन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जनता दल यूनाईटेड इस साल 26 नवंबर को भीम संसद का आयोजन कर रही है। बिहार सरकार के मंत्री और जदयू के राष्ट्रीय महासचिव अशोक चौधरी ने कहा कि कहा पिछले साल 26 नवम्बर 2023 को हम लोगों ने संविधान दिवस के अवसर पर भीम संसद का आयोजन किया था। भीम संसद कार्यक्रम को एक वर्ष पूरा हो रहा है। इस वर्ष 26 नवम्बर को संविधान दिवस के अवसर पर धूम-धाम से बापू सभागार में मनायंगे।

उन्होंने कहा कि पिछले 18-19 वर्षों में नीतीश कुमार ने इस प्रदेश में दलितों के उत्थान के लिए जो भी कार्यक्रम किए है, जिस तरह से दबे-कुचले, दलित-महादलित, पिछड़ो-अति पिछड़ों के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रूप से उत्थान के लिए इस प्रदेश में काम किये है। उन सबके उत्साह के रूप में बाबा साहब की जयंती दिनांक 14 अप्रैल, 2025 के दिन पूरे बिहार के सभी दलित भाईयों ने ''दलित महाकुम्भ'' कार्यक्रम का आयोजन करने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि अपने साथी मंत्रीगण और अन्य साथियों के साथ बैठक कर ''दलित महाकुम्भ'' कार्यक्रम स्थल गांधी मैदान या वेटनरी मैदान कोई एक स्थल निर्धारित कर आप सभी को बता दिया जाएगा। वहीं नेता प्रतिपक्ष पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार जी का काम बोलता है और तेजस्वी यादव का केवल ट्वीट बोलता है।

सपना देखोगे तो पूरा होगा, चार नहीं अब चालीस होगा : मुकेश सहनी

विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) के संस्थापक और बिहार के पूर्व मंत्री मुकेश सहनी ने समस्तीपुर में निषाद संकल्प यात्रा के तहत कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया। सहनी को 'सन ऑफ मल्लाह' के नाम से जाना जाता है। वीआईपी प्रमुख ने इंडिया गठबंधन को मजबूत करने और बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में ज्यादा से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने का संकल्प लिया। सहनी ने कहा कि निषाद समाज अब अपने अधिकार की लड़ाई के लिए तैयार है और सरकार में हिस्सेदारी लेकर अपने समाज को आगे बढ़ाएगा।

बाढ़ की समस्या पर सरकार पर निशाना

मुकेश सहनी ने बिहार में बाढ़ की समस्या पर सरकार की विफलता पर भी कड़ा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि बिहार, जो कृषि, पशुधन और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, आज भी देश के सबसे पिछड़े राज्यों में गिना जाता है। हर साल बाढ़ के कारण जनता को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन सरकार बाढ़ प्रभावित इलाकों में गरीबों को मरने के लिए छोड़ देती है। आपदा विभाग पिछले 20 सालों में भी बाढ़ से निजात दिलाने में असमर्थ रहा है।

एक देश एक चुनाव अलोकतांत्रिक : विजयन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। राज्य सरकार ने केरल विधानसभा में एक राष्ट्र, एक चुनाव के विरोध में एक प्रस्ताव पेश किया गया। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने केंद्र सरकार से प्रस्ताव को अलोकतांत्रिक बताते हुए वापस लेने का आग्रह करते हुए प्रस्ताव पेश किया। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन के प्रतिनिधि, संसदीय कार्य मंत्री एम बी राजेश ने तर्क दिया कि यह प्रस्ताव भारत की संघीय प्रणाली और विविधता को खतरे में डालता है, संभावित रूप से विभिन्न राज्य विधानसभाओं और स्थानीय सरकारों की शर्तों को कम कर देगा। विधानसभा का तर्क है कि एक साथ चुनाव संवैधानिक सिद्धांतों को कमजोर करते हैं और चुनावों को एक साथ कराने की उच्च स्तरीय समिति की सिफारिश के बावजूद भाजपा और आरएसएस के एजेंडे को थोपते हैं।

पंडालों में विराजमान हुई आदिशक्ति माँ दुर्गा

» सुल्तानपुर जनपद में सजे पंडाल, जुट रही श्रद्धालुओं की भीड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सुल्तानपुर।सुलतानपुर जिले में महीनों पहले से पंडाल बनने शुरू हो जाते हैं। यहां पर बंगाल के कारीगर कई महीनों पहले से डेरा जमाकर माँ की प्रतिमाओं को तैयार करने में जुट जाते हैं। ऐसे भव्य आयोजन के लिए प्रशासन भी कमर कस के तैयार रहता है।

दोस्तपुर की दुर्गा पूजा षष्ठमी के दिन से लेकर पूर्णिमा तक पूरे चरम पर रहती है, कस्बे में सभी पंडालों में माँ का आगमन हो चुका है, पूरा कस्बा माँ की भक्ति में डूबा हुआ नजर आ रहा है, हर तरफ सिर्फ माँ के भजन गुंजायमान है। शाम होते ही कस्बा झालरों की जगमगाहट एवं दूधिया रोशनी में नहाया नजर आता है। कहीं किसी पंडाल में माँ केदारनाथ की गुफा में अपने नौ रूपों में दर्शन दे रहीं है तो कही राम मंदिर में विराजमान हैं। सड़कों पर झुण्ड के झुण्ड श्रद्धालु माँ के दर्शनों की लिए पंडालों की तरफ जाते हुए दिखाई देते हैं।

शरद पूर्णिमा तक चलेगा आयोजन

ये आयोजन शरद पूर्णिमा तक चलेगा, पूर्णिमा के दिन भक्त माँ की प्रतिमाओं का भीगी आंखों के साथ विसर्जन करेंगे और माँ से प्रार्थना करेंगे कि अगले वर्ष फिर माँ उन्हें आशीर्वाद देने जल्दी ही आये।

पुलिस भी रहेगी मुस्तैद

वहीं इस भव्य आयोजन के लिए प्रशासन भी कमर कस के तैयार रहता है, क्यूंकि दुर्गा पूजा के साथ-साथ दसहरा का मेला एवं भारत मिलाप भी साथ में ही मनाया जाता है। भीड़ को नियंत्रित करने एवं किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए पुलिस पूरी तरह से तैयार रहती है, कई थानों की पुलिस भी तैनात की जाती है। सीओ विनय गौतम ने बताया कि पूरा मेला सीसीटीवी एवं ड्रोन कैमरों की निगरानी में रहेगा पुलिस हर संवेदनशील पॉइंट पर तैनात रहेगी। मेले में भी किसी प्रकार की गड़बड़ी करने की सोचने वालों के खिलाफ भी कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाएगी। थानाप्रभारी दोस्तपुर पंडित त्रिपाठी पुलिस बल के साथ दुर्गा पंडालों की सुरक्षा का जायजा ले रहे हैं।

पाकिस्तान के खिलाफ इंग्लैंड ने बनाए 823 रन

» टेस्ट क्रिकेट में चौथा बड़ा स्कोर, हैरी ब्रूक ने 317 रन की बड़ी पारी खेली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंग्लैंड। टेस्ट क्रिकेट का 2553वां मैच रिकॉर्ड बुक में हमेशा अपना विशेष स्थान बनाए रखेगा क्योंकि इंग्लैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ यहां खेले जा रहे मैच में अपनी पहली पारी सात विकेट पर 823 रन बनाकर समाप्त घोषित करके कुछ नए रिकॉर्ड बनाए। यह टेस्ट क्रिकेट में केवल चौथा अवसर है जबकि किसी टीम में 800 से अधिक रन बनाए। यह टेस्ट क्रिकेट में चौथा बड़ा स्कोर भी है।

रिकार्ड श्रीलंका के नाम पर है जिसने 1997 में भारत के खिलाफ छह विकेट पर 952 रन बना कर अपनी पारी समाप्त घोषित की थी। श्रीलंका ने तब टेस्ट क्रिकेट में सर्वोच्च स्कोर के इंग्लैंड के रिकॉर्ड को तोड़ा था जिसने 1938 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी पारी सात विकेट पर 903 रन बनाकर समाप्त घोषित की थी। इंग्लैंड ने इससे पहले 1930 में वेस्टइंडीज के खिलाफ 849 रन बनाए थे। जो रूट ने 262 रन बनाकर अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ पारी खेली। इस दौरान वह इंग्लैंड की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बने।

अर्शदीप ने पहली बार टॉप-10 में, पांड्या में आगे बढ़े

अर्शदीप सिंह लगातार अच्छे प्रदर्शन की बदौलत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में गेंदबाजों की सूची में शीर्ष 10 में जगह बनाते हुए आठवें पायदान पर पहुंच गए। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप ने पिछले रविवार को ग्वालियर में बांग्लादेश के खिलाफ पहले टी20 मुकाबले में 14 रन देकर तीन विकेट चटकाए थे। वह 642 रेटिंग अंकों के साथ आठ पायदान की छलांग लगाकर आठवें स्थान पर पहुंच गए। वह शीर्ष 10 में शामिल एकमात्र भारतीय गेंदबाज हैं। इंग्लैंड के आदिल राशिद सबसे छोटे प्रारूप में शीर्ष रैंकिंग वाले गेंदबाज बने हुए हैं जबकि वेस्टइंडीज के अकील हुसैन दूसरे और अफगानिस्तान के राशिद खान तीसरे स्थान पर हैं। बांग्लादेश के खिलाफ 16 गेंद में पांच चौकों और दो छक्कों की मदद से नाबाद 39 रन की पारी खेलने वाले हार्दिक पंड्या बल्लेबाजों की सूची में सात पायदान ऊपर चढ़कर 60वें स्थान पर पहुंच गए। इस शीर्ष भारतीय ऑलराउंडर ने 26 रन देकर एक विकेट भी चटकाया और ऑलराउंडरों की सूची में चार पायदान ऊपर चढ़कर तीसरे स्थान पर पहुंच गए।

कोविड-फंड घोटाले में फंसी कर्नाटक की तत्कालीन भाजपा सरकार!

राज्य की सियासत गरमाई भाजपा व कांग्रेस आमने-सामने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरू। कर्नाटक में कोविड-फंड घोटाले को लेकर सियासत गरमा गई है। सिद्धारमैया सरकार ने इसक लिए एसआईटी गठित करने का फैसला किया है। दरअसल इस घोटाले में तत्कालीन बीजेपी सरकार का नाम आ रहा है। जिसके मुख्यमंत्री बोम्मई रिपोर्ट में लोक लेखा समिति की रिपोर्ट और कई अन्य विवरणों को ध्यान में रखा गया है और भाजपा सरकार के कार्यकाल के दौरान हुए उल्लंघनों का आरोप लगाया गया है, जब डॉ. के. सुधाकर ने कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री के रूप में कार्य किया था।

इस सार्वजनिक खरीद अधिनियम में कर्नाटक पारदर्शिता का उल्लंघन करने और सरकारी मंजूरी के बिना उपकरण खरीदने का आरोप है। दिनांक 27.12.2023 की जांच रिपोर्ट की समीक्षा करने पर, यह स्पष्ट है कि चिकित्सा शिक्षा निदेशालय द्वारा पीपीई किट और अन्य उपकरण खरीदते समय निविदा खरीद नियमों का उल्लंघन किया गया था। कर्नाटक सरकार ने कोविड-19 महामारी के दौरान पीपीई किट और चिकित्सा उपकरणों की खरीद में कथित अनियमितताओं की जांच के बाद राज्य लेखा और लेखा परीक्षा विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी को निलंबित कर दिया है। जीपी रघु, महामारी के दौरान चिकित्सा शिक्षा विभाग के वित्तीय सलाहकार थे। उन पर सार्वजनिक खरीद अधिनियम में कर्नाटक पारदर्शिता का उल्लंघन करने और सरकारी मंजूरी के बिना उपकरण खरीदने का आरोप है। दिनांक 27.12.2023 की जांच रिपोर्ट की समीक्षा करने पर, यह स्पष्ट है कि चिकित्सा शिक्षा निदेशालय द्वारा पीपीई किट और अन्य उपकरण खरीदते समय निविदा खरीद नियमों का उल्लंघन किया गया था।

7000 करोड़ की खरीद अनियमितताओं को लेकर सिद्धारमैया कैबिनेट ने की समीक्षा

कर्नाटक सरकार रिपोर्ट पर कार्रवाई के लिए एसआईटी गठित करेगी

कर्नाटक सरकार ने कोविड-19 'घोटाले' से जुड़ी एक रिपोर्ट पर आगे की कार्रवाई के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) और एक कैबिनेट उपसमिति गठित करने का निर्णय लिया। न्यायमूर्ति माइकल डी कुन्हा जांच आयोग ने राज्य में पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के दौरान, कोविड-19 महामारी के समय उपकरणों और दवाओं की खरीद में कथित अनियमितताओं की जांच करने के बाद यह रिपोर्ट दी है। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में एसआईटी और कैबिनेट उप समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। कैबिनेट के फैसले के बाद मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार के नेतृत्व में सात सदस्यीय कैबिनेट उपसमिति का गठन किया। गृह मंत्री जी परमेश्वर, विधि मंत्री एच के पाटिल, स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव, ग्रामीण विकास मंत्री प्रियांक खरगे, श्रम मंत्री संतोष लाड और चिकित्सा शिक्षा मंत्री शरण प्रकाश पाटिल समिति के सदस्य हैं।

आंशिक' रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है : मंत्री एच के पाटिल

कानून और संसदीय मामलों के मंत्री एच के पाटिल ने बाद कहा कि 31 अगस्त को 11 खंडों में प्रस्तुत 'आंशिक' रिपोर्ट में आयोग ने 7,223.64 करोड़ रुपये के खर्च की जांच की। मंत्री ने कहा कि उन्होंने इतनी बड़ी राशि के दुरुपयोग को नहीं इंगित किया है लेकिन आयोग ने 500 करोड़ रुपये की वसूल किये जाने की सिफारिश की है। उन्होंने कहा, ''आयोग ने बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका (बीबीएमपी) के चार जोन और राज्य के 31 जिलों से रिपोर्ट मांगी है और उसे अभी तक रिपोर्ट नहीं मिली है। संबंधित विभागों से 55,000 फाइलों का सत्यापन करने के बाद 'आंशिक' रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है।'

महादेव ऐप फ्रॉड का आरोपी सौरभ चंद्राकर दुबई से अरेस्ट

6 हजार करोड़ की हेराफेरी का आरोप, जल्द लाया जाएगा भारत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। महादेव सट्टा ऐप के सरगना सौरभ चंद्राकर को दुबई में हिरासत में लेने की खबर है। सूत्रों के अुसार, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुरोध पर जारी इंटरपोल के रेड कॉर्नर नोटिस के तहत यह कार्रवाई की गई है। यूएई के अधिकारियों ने भारत सरकार और सीबीआई को सौरभ चंद्राकर की हिरासत के बारे में जानकारी दी है।

हिरासत की खबर के बाद अब उसके प्रत्यर्पण की प्रक्रिया तेजी से की जा रही है। बताया जा रहा है कि सौरभ चंद्राकर को जल्द ही भारत लाया जाएगा। बताया गया है कि दिसंबर 2023 में सौरभ चंद्राकर को यूएई में हिरासत में ले लिया गया था, तब

से वह दुबई पुलिस की कस्टडी में ही है। ईडी सूत्रों का कहना है कि उसे भारत लगाने की लगभग सभी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं और अगले 10 दिनों में उसे भारत डिपोर्ट कर लिया जाएगा। दरअसल महादेव बेटिंग ऐप को ऑनलाइन सट्टेबाजी के लिए बनाया गया था। इस पर यूजर्स पोकर, कार्ड गेम्स, चांस गेम्स नाम से लाइव गेम खेलते थे. ऐप के जरिए क्रिकेट, बैडमिंटन, टेनिस, फुटबॉल जैसे खेलों और चुनावों में सट्टेबाजी भी की जाती थी. अवैध सट्टे के नटवर्क के जरिए इस ऐप का जाल तेजी से फैला. छत्तीसगढ़ में इस ऐप को सबसे ज्यादा यूज किया जाने लगा. इस ऐप से धोखाधड़ी के लिए एक पूरा खाका बनाया गया था।

चुनाव से पहले महायुति का बढ़ा संकट, भाजपा सहमी

10 मिनट में ही कैबिनेट बैठक से बाहर निकले अजित पवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ गठबंधन महायुती में सबकुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा है। यह चुनाव से पहले भाजपा और उसके सहयोगी दलों के लिए ठीक नहीं है। खबर आ रही है कि कैबिनेट बैठक को बीच में ही छोड़कर अजित पवार चले गए। सूत्रों के मुताबिक, असहमति तब शुरू हुई जब आगामी विधानसभा चुनावों के संदर्भ में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने राज्य को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से कई प्रमुख घोषणाओं का प्रस्ताव रखा।

हालाँकि, पवार ने प्रस्तावों को अपनी मंजूरी देने से इनकार कर दिया और उनमें से कुछ पर कड़ी आपत्ति व्यक्त की, जिससे दोनों नेताओं के बीच तीखी नोकझोंक हुई। इस खबर के आते ही

भाजपा भी असहज हो गई। हालांकि वह कह रही है सब ठीक है। अंदरूनी सूत्रों ने कहा कि कैबिनेट ने आसन्न चुनाव से पहले कई महत्वपूर्ण पहलों और कल्याणकारी योजनाओं को तेजी से शुरू करने पर ध्यान केंद्रित किया है। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महायुति सरकार मतदाताओं का पक्ष हासिल करने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू करने पर जोर दे रही है। पिछली कैबिनेट बैठकों में, विकास पर सरकार के फोकस को उजागर करते हुए, घोषणाओं की एक श्रृंखला पहले ही की जा चुकी थी। हालाँकि, गुरुवार की बैठक में मुख्यमंत्री के प्रस्ताव को पवार के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा।

सूत्रों के अनुसार, असहमति की जड़ बारामती के कुछ प्रस्ताव प्रतीत होते हैं जो शिंदे द्वारा पेश किए गए थे। सूत्र ने खुलासा किया कि ऐसी संभावना थी कि प्रस्ताव मंजूरी के लिए शरद पवार के कार्यालय से मुख्यमंत्री के पास आए होंगे, जिससे कथित तौर पर उनके भतीजे अजित पवार नाराज हो गए और उन्होंने इसे मंजूरी देने से इनकार कर दिया। हालाँकि कैबिनेट ने बाद में 38 प्रस्तावों को मंजूरी दे दी, लेकिन यह स्पष्ट नहीं था कि इसमें बारामती परियोजना शामिल है या नहीं। अजित पवार ने मामले से पल्ला झाड़ने की कोशिश की।

फोटो: 4 पीएम

नवरात्रि बंगाली क्लब के दुर्गा पूजा पंडाल में संधी पूजा करते बंगाली समाज के लोग।

जन्म के आधार पर तय होती है जाति यह सामाजिक बुराई: भैयाजी जोशी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता सुरेश भैयाजी ने शुक्रवार को बड़ा बयान दिया। उन्होंने एक समाज के तौर पर सभी से भेदभाव खत्म करने और एकजुट होने की अपील की। भैयाजी ने कहा कि जाति जन्म से तय होती है। यह एक सामाजिक बुराई है।

इसे खत्म करने की जरूरत है। जहां भी आपस में भेदभाव होता है, वह समाज समाज नहीं रहता है। समाज के सभी अंग महत्वूर्ण हैं। कोई कमतर नहीं होता है। सुरेश भैयाजी ने कहा कि जन्म के आधार पर जातियां तय होती हैं। हमको हमारा नाम मिलता है। भाषा मिलती है। हमको भगवान

मिलते हैं। धर्म के ग्रंथ मिलते हैं। हम कई प्रकार के महापुरुषों के वंशज कहलाते हैं। क्या वो किसी एक जाति के कारण हैं, क्या कोई कह सकता है कि हरिद्वार किस जाति का है, क्या हमारे 12 ज्योतिर्लिंग किसी जाति के हैं, क्या इस देश के कोने-कोने के 51 शक्तिपीठ किसी जाति के उन्होंने आगे कहा कि इस देश के चारों दिशाओं में रहने वाला, जो आपने आपको हिंदू मानता है। वो सब इन बातों को अपना मानता है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।